ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-1* February- 2020
Innovation The Research Concept

श्री अग्रभागवत में निहित शिक्षाओं का राष्ट्र निर्माण में महत्व

अशोक कुमार सिडाना
आचार्य,
शिक्षा विभाग,
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ,
जामडोली, जयपुर,
राजस्थान, भारत

सरिता शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

यह निर्विवाद सत्य है कि दिव्य ज्ञान का प्रकाश सारे विश्व में सर्वप्रथम धर्म–भूमि भारत से ही विस्तारित हुआ। भारत भूमि सदैव ही अवतारों और महापुरूषों की जन्म और उनकी क्रीड़ा स्थली के रूप में विख्यात रही है। इस पवित्र भूमि पर भगवान मर्यादा पुरूषोत्तम राम, श्रीकृष्ण, महात्मा गौतम बुद्ध, भगवान महावीर, संत कबीर जैसे महान पुरूषों ने जन्म लिया। ऐसे ही राष्ट्र गौरव, आर्याकुल दिवाकर, ऋषियों की वैदिक परम्पराओं और समाजवाद के संस्थापक, अहिंसा के पुजारी, शांति दूत महाराजा अग्रसेन ने महाभारत के पश्चात लुप्त होती संस्कृति, जर्जरित होती सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण का अभूतपूर्व कार्य किया। श्री अग्रसेन महाराज के जीवनचरित्र का वर्णन श्री अग्रभागवत ग्रन्थ में किया गया। श्री अग्रभागवत में निहित शिक्षाऐं अपना कर हम श्रद्धा, उद्योगशीलता, निर्भयता, सात्विकता, ज्ञान, दान, तप, दम, स्वाध्याय, अहिंसा, शांति, दयादि दैवीगुण–सम्पदा युक्त जीवन मूल्यों की पुनर्प्रतिस्थापना कर सकते है और एक सुदृढ़ समाज और राज्य का निर्माण कर सकते हैं।

मुख्य शब्द : श्री अग्रभागवत, शिक्षा, राष्ट्र निर्माण, महत्त्व।

प्रस्तावना

युग दृष्टा, वैश्य समाज के आदि पुरूष और मानव जाति के परम पितामह महाराजा अग्रसेन का जन्म मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की चौतीसवीं पीढ़ी में हुआ। वेदानुयायी आदर्श पुरूष महाराज अग्रसेन ने अथर्व वेद के मंत्र ''शत–हस्त समाहरः, सहस्त्र–हस्त संकिरः'' अर्थात् ''हे दो हाथों वाले, तु सौ हाथों वाला बनकर कृषि, व्यापार–उद्योगों, पशुपालन इत्यादि से प्रचुर धन एश्वर्यो को प्राप्त कर और हजारों हाथों वाला होकर समाज और राष्ट्र उत्थान के लिए अभाव ग्रसित एवं पीड़ितों की सहायता कर।'' महाराजा ने इस भावना को आधार बनाकर समृद्ध और सुखी समाज की संरचना का बीड़ा उठाया। इस हेतु 'एक ईंट और एक रूपया'' के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर अभाव ग्रसितों को सुखद जीवन जीने की सरल व सर्व हितकारी योजना से लाभान्वित किया।

महाराजा का यह मूल मंत्र सहकारिता और समता पर आधारित, भेदभाव रहित पूर्णरूप से स्नेह, सद्भाव, समता, सम्मान, समकक्षता, संगठन और पुर्नवास का अनुठा परिचय है। जो अध्यावधि ऐतिहासिक उदाहरण एवं चिर भविष्य के लिए प्रेरणा–स्त्रोत बना रहेगा।

अग्रभागवत ग्रन्थ में महाराज अग्रसेन महाराज के व्यक्तित्व और कार्यो का वर्णन किया गया है जिनसे स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत चरित्र शुद्ध रखकर समाज एवं राष्ट्र के कार्यो को किया जा सकता है और शक्तिशाली, आत्मनिर्भर, विकसित और अजेय राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

अग्रभागवत में निहित राष्ट्र निर्माण हेतु मूल्य

पवित्रता तथा जीवन की सद्भावना

मानव मूल्य एक ऐसी आचार संहिता या सदगुण समूह है जिसे अपने संस्कारों तथा पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवनशैली का निर्माण करता है। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा नियन्त्रित होते हैं तो दूसरी ओर उनकी संस्कृति एवं परम्परा द्वारा परिपोषित होते हैं। इन जीवन मूल्यों की कसौटी, त्याग, प्रेम, पवित्रता, सत्य, अंहिसा जैसे मूल्य माने जाते हैं।

जीवन मूल्य वो होते हैं जिन पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को सरल और सादगी से पूर्ण बनाता है। श्री अग्रभागवत में सर्वप्रथम सत्य, धर्म और संयम पर जोर दिया है। जो धर्म आधारित है, जो सत्य है अर्थात् जो समाज में प्रचलित आस्थाओं और अनुभवों द्वारा प्रमाणित है उस पर यदि संयम के साथ

चला जाए तो जीवन उत्साह युक्त और आनंदमय हो जाऐगा। मानवीय जीवन पदार्थ और चेतना दोनों है अतः पदार्थ और चेतना में सामंजस्य बैठाना ही जीवन है। महाराज श्री अग्रसेन कहते हैं यदि जीवन को सफल बनाना है तो सभी प्राणियों के प्रति दया, मैत्रीपूर्ण व्यवहार, दान, सबसे प्रति आदर भाव और मधुर वाणी का प्रयोग करें। वस्तुतः महामना अग्रसेन जी का सम्पूर्ण जीवन पवित्र कर्म लोक कल्याण का प्रत्यक्ष स्वरूप है सर्वलोक हितकारी है, जो सतत उद्घोषित करता है, कि सारे जगत का कल्याण करना ही मानव का परमधर्म है।

।। सर्व लोक हितो धर्मः।।

चरित्र निर्माण

वर्तमान समय में आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में जीवन मूल्यों का अवमूल्यन तीव्र गति से हो रहा है। इस ह्रास का मुख्य कारण चारित्रिक पतन है। कोई भी ज्ञान और दर्शन चरित्र के बिना निरर्थक है। अतः किसी राष्ट्र और समाज की उन्नति और विकास उसके नागरिकों के ज्ञान के साथ उसके आचरण पर भी निर्भर करता है। उच्च चरित्र वाले नागरिकों से युक्त राष्ट्र उन्नति की चरम ऊँचाईयों को प्राप्त कर सकता है। आज की युवा पीढ़ी में चारित्रिक पतन को रोकने के लिए आवश्यक है कि बालक को एक ऐसा स्वस्थ, प्रतिस्पर्धात्मक, सृजनात्मक, जीवन मूल्यों युक्त ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाए जिसमें उसके शैक्षिक, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की प्राप्ति से चारित्रिक मूल्यों की प्राप्ति हो।

श्री अग्रभागवत में वर्णित जीवन मूल्यों और सिद्धान्तों को जीवन में ग्रहण करने से राष्ट्र के निर्माण के समक्ष खड़ी गम्भीर समस्याओं जैसे लड़ाई–दंगे, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, चोरी, आंतकवाद, असंयमित व्यवहार, क्रोध, हिंसा का निवारण स्वतः ही हो सकता है।

श्री अग्रसेन जी ने बताया है कि संकट के समय धैर्य धारण कर अपने चारित्रिक बल से तथा विवेकपूर्ण निर्णय लेने से अनिष्ट का विनाश होता है तथा योग्य व अनुकूल पुरूषार्थ से विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाया जा सकता है। इससे एक दृढ़ राष्ट्र का निर्माण होता है अतः विद्यार्थी श्री अग्रसेन महाराज के उत्तम आदर्श चरित्र और व्यक्तित्व का अनुसरणा करें तो प्रबल और अधिक समृद्धशाली राष्ट्र का निर्माण होगा।

नागरिक कर्तव्यों का विकास

प्राचीन भारतीय संस्कृति में यह प्रथा रही है कि लोकतंत्रात्मक जीवन प्रणाली का विकास हों। लोकतांत्रिक प्रणाली तभी सफल मानी जाती है जब यह समानता, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, सद्भावना तथा सहयोग पर आधारित हो। इसके लिए आवश्यक है कि राज्य द्वारा नागरिकों को न सिर्फ अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए अपितु कर्त्तव्यों के प्रति भी जागरूकता अपनाई जाए। श्री अग्रभागवत में श्री अग्रसेन महाराज ने अपने नागरिकों के कर्तव्य निर्धारित किए जिन्हें पालन करना अनिवार्य था। उन्होंने समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए सर्वोत्थान की भावना से 'उपकारहीन उपक्रम' नियम लागू किया जिसके अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य था कि बाहर से आने वाले व्यक्तियों को एक ईंट व एक रूपया प्रदान किया जाए ताकि उनमें विभेद की परिस्थितियाँ उत्पन्न न हों, अपितु परस्पर सौजन्यता के साथ बन्धुत्व की भावना का विकास हो।

महाराज अग्रसेन के अनुसार मनुष्य केवल अपने लिए नहीं जीता, वह अपने साथ–साथ दूसरों के कल्याण के लिए भी जीवन व्यतीत करता है। अतः प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र कल्याण के लिए प्रयत्न करें और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध से सम्पन्न भावी पीढ़ी तैयार करे। राष्ट्र के प्रति कर्तव्य हमें एकता, समरसता, सहयोग, भाईचारा, सत्य, अहिंसा, त्याग, विनम्रता, समानता आदि जैसे मूल्य जीवन को अपनाकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते है।

सामाजिक कुशलता तथा सुख की उन्नति

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसके सामाजिक कुशल नागरिकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अग्रभागवत काल में अग्रसेन महाराज के राज्य में अट्ठारह प्रकार की प्रजाओं के साथ हर्ष पूर्वक निवास करते थे। ये प्रजा अपने–अपने कार्यो में निपुण थी। देश–देशांतरों से, चारों वर्णों के लोग, नर नारियाँ, एकत्रित होकर आग्रेय गणराज्य में आने लगे। जिनमें ब्राह्मण जो वेदों के तत्वज्ञ, संपूर्ण शास्त्रों में पारगंत, धर्मज्ञ, कर्मकाण्ड में निपुण, पवित्र आचरण करने वाले तथा समदर्शी थे। युद्ध कला में निपुण शूरवीर तथा क्षेत्रीय धर्म पालन करने वाले लोग भी थे। धन से सम्पन्न वैश्य, व्यापारी, रत्न पारखी तथा आभूषण बनाने वाले स्वर्णकार भी थे। 'आग्रेय' गणराज्य के लोग अपनी कुशलता से अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने में स्वयं समर्थ थे, तथा सभी प्रकार के द्रव्यो (गोधन, गजधन, वाजिधन, रत्नादिक) से परिपूर्ण थे। प्रजा अपने सामाजिक दायित्वों से भली–भांति परिचित थी और उनका पालन करती थी। अतः अग्रसेन महाराज के राज्य में सुख शान्ति और सामाजिक समता विद्यमान थी।

संस्कृति का संरक्षण तथा विस्तार

संस्कृति किसी समाज में व्याप्त गुणों का समग्र नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने तथा कार्य करने से बना है। यह हमारी अन्तःस्थ प्रकृति की अभिव्यक्ति है। किसी समाज की संस्कृति वे सूक्ष्म संस्कार है, जिनके माध्यम से लोग परस्पर सम्प्रेषण करते है, विचार करते है और जीवन के विषय में अपनी अभिवृतियों और ज्ञान को दिशा देते हैं। श्री अग्रसेन महाराज का दिव्य चरित्र द्वारा समाज में मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। अग्र भागवत का एक–एक अक्षर, प्रत्येक पद तथा वाक्य प्रेरणा से परिपूर्ण है तथा सम्पूर्ण जगत के लिए कल्याणकारी अहित का विनाशक तथा संस्कृति का संरक्षण करने वाला है।

आज समाज में संस्कृति जर्जर होती जा रही है जिससे युवकों में भटकाव हो रहा है। परन्तु अग्रभागवत में निहित हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक विरासतों को यदि हम अपने क्रियाकलापों में समायोजित कर ले तो देश प्रेम, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता, नैतिक आदर्शों आदि जीवन मूल्यों को प्राप्त कर लेगें। श्री अग्रसेन जी ने यज्ञादि कार्यों में हिंसा जैसे कार्यों से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई। उनके द्वारा प्रतिपादित महत्वपूर्ण विचार परिवर्तन का मनुष्य जाति पर गहरा प्रभाव पड़ा और समाज के

लोग अहिंसा, निरामिष भोजन, धर्म और सदाचार का सदैव पालन करते आ रहे हैं और यह परम्परागत धरोहर बन गई है।

जनतन्त्र को सुदृढ़ बनाना

जनतन्त्र एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र रूप से चिन्तन, मनन तथा कार्य करने के अवसर प्रदान किए जाते है। यह एक आदर्श जीवन यापन का ढंग है, जिससे मानवीय जीवन का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा संस्कृति क्षेत्र प्रभावित होता है तथा मानव को भेदभाव से ऊपर उठकर जीवन व्यतीत करने एवं अपनी समस्त शक्तियों को विकसित करने के लिए स्वतंत्रता तथा समान अवसर प्रदान किए जाते है। सुदृढ़ जनतन्त्र से न केवल राष्ट्रीय चेतना का विकास होता है बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना भी विकसित होती है। श्री अग्रसेन महाराज ने अपने आग्रेय गणराज्य में प्रशासन व्यवस्था, लोकतन्त्र एवं पंचायती राज्य शासन की पद्धति पर आधारित समाजवाद एवं समन्वयवाद की भावना से की। उन्होंने अपने गणराज्य को 18 क्षेत्रों में विभक्त किया। राज्य की संचालन व्यवस्था जनता के चुने सदस्य प्रतिनिधि (गण) करते थे। इनके परामर्श द्वारा राज्य की व्यवस्थायें संचालित होती थी। महाराज अग्रसेन ने 'एक रूपया एक ईंट' व्यवस्था लागू कर सहकारिता एवं समाजवाद का अनूठा उदाहरण प्रतिपादित किया जिससे समाज में साम्यवाद एवं विश्वबन्धुत्व की भावना विकसित हुई। उनके राज्य में लोकतन्त्र के मूल सिद्धान्त (1) स्वतंत्रता (2) समानता (3) बंधुत्व और (4) न्याय की पालना होती थी। श्री अग्रसेन जी बड़े दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने न केवल अपने राज्य बल्कि अन्य राज्यों की उन्नति के लिए मित्रता और व्यापार व्यवसाय संबंध स्थापित किये। उन्होंने जनहित व जन कल्याण के लिए अत्यन्त दूरदर्शिता, प्रजा वत्सल, समाजसेवी व कूटनीतिज्ञ शासक के रूप में शासन किया। जन, जाति या धन के आधार पर ऊँच–नीच के भेद को मिटाकर सभी नागरिकों के साथ समानता का व्यवहार किया। सबकी समृद्धि की स्थापना के लिए अपने पड़ौसी राजाओं से संधि और मित्रता स्थापित की और युद्धों से होने वाले विनाश के भय को समाप्त किया। इस प्रकार महाराज अग्रसेन ने एक आदर्श राष्ट्र की स्थापना की।

सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास

प्रत्येक मनुष्य की अपनी–अपनी रूचियाँ, योग्यताऐं तथा क्षमतायें होती है। यदि उन्हें अपनी योग्यताओं के अनुसार अवसर की समानता प्रदान की जाए तथा अपने–अपने पूर्ण विकास की स्वतन्त्रता प्रदान की जाए तो वह देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण हेतु उसके नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, जीवन मूल्यों को विकसित करना होगा। कोई भी मनुष्य जिस सामाजिक व्यवस्था में रहता है उसी का अनुकरण करता है। यह इस बात पर निर्भर है कि उस समाज में जीवन मूल्य कितने आदर्शयुक्त और प्रभावी है।

श्री अग्रसेन महाराज ने अपने नैतिक मूल्यों का उदाहरण प्रस्तुत कर समाज में आदर्श व्यवस्था का सन्देश दिया। उनके राज्य में सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त थे। सभी नागरिकों में सामाजिक अभिवृतियों का विकास हुआ जिससे प्रत्येक नागरिक अपने–अपने उत्तरदायित्वों को समझ कर तथा पालन कर समाज की उन्नति और विकास के लिए कार्य करने लगा। उनका मधुर वचन था सबको तृप्त एवं प्रसन्न किया जाए। राजकोष खोल दिये जाए और सभी (याचकों) को खुले हाथों से सहयोग दिया जाए। महाराज अग्रसेन अपने राज्य की प्रजा की रक्षा, सत्य का पालन तथा मानवता के शत्रुओं का संहार करते थे। उनके इन कार्यों से, निश्चित होकर प्रजा वर्ग के सभी लोग अपने अपने कर्मो के पालन में संलग्न रहते थे। श्री अग्रसेन महाराज के अनुसार सद्भाव, सच्चाई, दान, विश्वास और आशा हमारे आध्यात्मिक मूल्य है। सच्चे विचार और सद्भाव रखने के लिए, दोनों शब्दों और कार्यों को हमारे जीवन के बाकी हिस्सों के साथ एक सुसंगति तरीके से जोड़ना चाहिए, केवल इस तरह से हम चेतना की बड़ी स्थिति तक पहुँच सकते है। यह स्थिति हमें आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुंचाती है।

श्री अग्रभागवत में विभिन्न संवादों में बताया गया है कि मनुष्य मन, वाणी और कर्म से जिन कार्यों का निरन्तर सेवन करता है, वे कार्य उसका स्वरूप बन जाते हैं, अतः सदैव जगत के कल्याणकारी कार्यों को व्यस्त रहना चाहिए। अपने कर्मो में कर्तव्यों को आचरित करना चाहिए। श्री अग्रसेन महाराज ने कहा कि श्रेष्ठता का आधार न योनि, न संस्कार और न ही शास्त्रों का ज्ञान है। श्रेष्ठता का कारण केवल मनुष्य का आचरण होता है अतः यदि मनुष्य अपने आचरण में क्षमा, धैर्य, अहिंसा, समता, सत्य और सरलता धारण कर ले तो न केवल राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति समस्त सुखों से समृद्ध होगी।

निष्कर्ष

श्री अग्रभगवत में निहित महाराज अग्रसेन महाराज के व्यक्तित्व और कृतित्व से समूचे विश्व को प्रेरणा मिलती है। वे एक पौराणिक महापुरूष थे और अपने द्वारा प्रतिस्थापित ऐतिहासिक कार्यों से सारी मनुष्य जाति को लाभान्वित किया। उन्होंने सभी प्रकार से एक महत्वपूर्ण समाजवादी साम्राज्य की स्थापना करके विश्व के समक्ष अनूठे आदर्श और पद्धतियाँ प्रस्तुत की। उनके बताए गए मार्ग पर चलकर हमें चाहिए कि हम जिम्मेदार नागरिक बने तभी हम राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर पाऐंगे। एक राष्ट्र को सफल और सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है कि हम देश के प्रति कर्तव्य निभाए और दूसरों को भी जागरूक करे, देश में फैली बुराइयों को खत्म करने हेतु ईमानदारी से सहयोग प्रदान करें और एक प्रगतिशील और अखण्ड राष्ट्र का निर्माण करें।

अंत टिप्पणी

1. *बेदिल, श्री रामगोपाल : श्री अग्रभागवत, महाराष्ट्र, अग्रविश्व ट्रस्ट।*
2. *गोयल, चाँद बिहारी लाल (साहित्य रत्न, साहित्य निधि) : महाराज श्री अग्रसेन : जीवन एवं दर्शन : विचार संगोष्ठी।*

3. *श्री अग्रसेन गीत माला : प्रकाशक– श्री अग्रवाल सेवा संघ।*
4. *अग्रवाल, तिलक राज : महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा विकास संस्थान।*
5. *अग्रवाल, रामलाल : अग्र काव्य : अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र।*
6. *शर्मा, डॉ. अशोक कुमार : प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था : लिटरेरी सर्किल।*
7. *स्वामी, अड़गड़ानन्द : यथार्थ गीता – श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्द जी आश्रम ट्रस्ट।*
8. *स्वामी, सदानन्द : वेदान्त सार : सेन्ट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट।*